

## पाठ 31 अध्याय 33 और 34

आइए हम इस बात को स्पष्ट कर दें कि निर्गमन की इस पुस्तक में इस समय इस्राएल परमेश्वर के साथ कहाँ खड़ा है: मूसा की वाचा टूट चुकी है और अब लागू नहीं है, इसलिए परमेश्वर के साथ इस्राएल का संबंध भी टूट चुका है; यह सब सोने के बछड़े की मूर्ति पूजा का परिणाम है।

इस्राएल द्वारा मूसा की वाचा की कुछ शर्तों को तोड़ने का परिणाम परमेश्वर के चुने हुए लोगों के रूप में इस्राएल का अंत या उन्मूलन नहीं होगा, क्योंकि जब मूसा नए पत्थर की पट्टियों के साथ पहाड़ पर वापस गया, तो प्रभु ने मूसा के साथ उसी वाचा को फिर से स्थापित किया। हम इसे व्यवस्थाविवरण तक स्पष्ट नहीं देखते हैं।

### अध्याय 33 पूरा पढ़ें

यहोवा, पद 1 में मूसा को इस्राएल को शिविर बंद करने और आगे बढ़ने का आदेश देता है। वे अभी भी माउंट सिनाई के तल पर हैं और लगभग एक साल से वहाँ है। कानून दिया जा चुका है, परमेश्वर के निवास के लिए निर्देश दिए जा चुके हैं, और अब उनके लक्ष्य की ओर बढ़ने का समय आ गया है: वादा किए गए देश, कनान। यह अच्छी खबर है। बुरी खबर यह है कि इस्राएल द्वारा वाचा तोड़ने की सज़ा यह है कि परमेश्वर उनके बीच नहीं रहेगा।

हालाँकि, अपनी महान दया में, वह इस्राएल के आगे एक स्वर्गादूत भेजेगा, जो इस्राएल के आगमन से पहले कनानियों, एमोरियों, हितियों, परिजियों, हिवियों और यबूसियों को बाहर निकाल देगा।

परमेश्वर लोगों से कहता है कि उन्हें अपने आभूषण उतारने हैं। यानी उन्हें अपने कोई भी आभूषण नहीं पहनने हैं। यह इब्रानियों के लिए दो बातों का संकेत है: 1) आभूषण खुशी के साथ-साथ चलते हैं, और जो कुछ हुआ है, उसे देखते हुए ऐसा करने की आवश्यकता नहीं है। उन्हें अपने कार्यों के कारण परमेश्वर की उपस्थिति और वाचा खोने के कारण शोक की स्थिति में होना चाहिए। 2) आभूषण वही था जिसका इस्तेमाल पहले स्वर्ण बछड़ा बनाने के लिए किया गया था। यह वह नहीं था जिसके लिए इसका इस्तेमाल किया जाना चाहिए था। आभूषण मिश्रियों पर परमेश्वर द्वारा निर्धारित एक तरह के प्रतिशोध का परिणाम थे, जब यहोवा ने इस्राएलियों को मिस्र छोड़ते समय "उसे लूटने" का निर्देश दिया था और, कीमती धातुएँ, आंशिक रूप से, परमेश्वर के निवास स्थान के लिए आवश्यक होने वाली थीं।

पद 7 में हमें बताया गया है कि जब भी मूसा तम्बू लगाता था, तो वह इस्राएल के शिविर के बाहर ऐसा करता था। अब, आइए एक मिनट के लिए इसके बारे में सोचें; यहाँ कुछ दिलचस्प पहलू हैं, जिन्हें मैं आपको बताना चाहूँगा। सबसे पहले, अधिकांश टिप्पणीकार इस तम्बू को परमेश्वर द्वारा नियुक्त तम्बू मानते हैं, और भले ही इन पदों में "तम्बू" शब्द मौजूद नहीं है, फिर भी कई अनुवादकों ने तय किया है कि यहाँ इसका यही मतलब है, इसलिए उन्होंने इस शब्द को डाला है।

मुझे इस धारणा से समस्या है कि उस समय तम्बू का अस्तित्व था भी या नहीं।

सबसे पहले, समय सही नहीं लगता। अब तक, जो कुछ दिया गया है वह केवल तम्बू बनाने के निर्देश हैं। इस बात का कोई सबूत नहीं है कि तम्बू वास्तव में बनाया गया है। सोने के बछड़े की घटना ने सब कुछ बाधित कर दिया है। मूसा के पहाड़ पर वापस जाने और दूसरी पटियाएँ प्राप्त करने के बाद ही तम्बू का निर्माण होगा, और इसलिए परमेश्वर ने खुद को इस्राएल से अलग कर लिया है क्योंकि वाचा वास्तव में मौजूद नहीं है जो उन्हें अपना लोग बनाती है।

दूसरा, इन पदों में मूसा द्वारा बनाए गए ढाँचे का वर्णन करने के लिए इस्तेमाल किया गया शब्द इब्रानी में ओहेल था इसका मतलब है, "तम्बू" और, इस अध्याय में कई जगहों पर इस शब्द का इस्तेमाल किया गया है, और यह एकमात्र शब्द है जिसका इस्तेमाल मूसा द्वारा शिविर के बाहर बनाए गए ढाँचे को संदर्भित करने के लिए किया जाता है। इसका इस्तेमाल तब भी किया जाता है जब हमें बताया जाता है कि जब भी इस्राएली मूसा को अपने ओहेल की ओर जाते हुए देखते थे, तो वे अपने ओहेल के बाहर खड़े हो जाते थे।

तीसरा संकेत यह है कि यह मूसा ही था जिसने तम्बू खड़ा किया था। हम जानते हैं कि तम्बू को खड़ा करने में सैकड़ों-हजारों लोगों की ज़रूरत पड़ी होगी, और यह पद हमें यह आभास नहीं देती कि तम्बू को खड़ा करने में मूसा और शायद उसके सबसे करीबी परिवार के अलावा और कोई शामिल था।

अंत में, हम संख्या और व्यवस्थाविवरण से जानते हैं कि जब तम्बू बनाया गया था, तो जनजातियों ने इसे एक बहुत ही विशिष्ट क्रम में घेर लिया था, जिसके बारे में हम पहले ही चर्चा कर चुके हैं। उस व्यवस्था में, तम्बू न केवल शिविर के अंदर है, बल्कि यह शिविर का केंद्र और ध्यान है।

मुझे लगता है कि यहाँ इस्तेमाल किया गया तम्बू अस्थायी था। यह शायद एक साधारण तम्बू था। वास्तव में यह शायद मूसा का निजी तम्बू था। हमें पद 9-10 में बताया गया है कि बादल तम्बू के प्रवेश द्वार पर खड़ा होगा, जबकि बाद में, जब हमें यकीन हो गया कि हम स्वर्गीय तम्बू के परमेश्वर द्वारा नियुक्त मॉडल, यानी जंगल के तम्बू के बारे में बात करें, तो बादल तम्बू के ऊपर मंडराता था। तो, यहाँ कुछ अलग है।

हम यह भी देखते हैं कि यहोशू कभी भी तम्बू के अंदर से बाहर नहीं निकला। यह निश्चित रूप से जंगल के तम्बू के मामले में नहीं था, क्योंकि केवल पुजारी, लेवी, तम्बू में प्रवेश कर सकते थे, और यहोशू एक लेवी नहीं था। वह एप्रैम के गोत्र से था। वास्तव में, बाद में हमें बताया जाएगा कि लेवी के पुजारी के अलावा किसी और को मार दिया जाएगा यदि उनका तम्बू से कोई लेना-देना था। मूसा को अंदर जाने की अनुमति कैसे दी गई? वह एक लेवी था।

हमारे पास जो चित्र है वह यह है कि जब मूसा को यहोवा से मिलने की आवश्यकता हुई तो उसने तम्बू के बाहर ही मुलाकात की, जबकि यहोशू तम्बू के अंदर छिपकर मूसा और परमेश्वर से अलग रहा।

अब, एक उचित प्रश्न यह है कि, ऐसा कैसे हुआ कि परमेश्वर ने माउंट सिनाई पर मूसा से कहा कि यदि वह मनुष्य के साथ रहने जा रहा है, तो उसे अपनी उपस्थिति के लिए इस विस्तृत और विस्तृत तम्बू के निर्माण

की आवश्यकता है, लेकिन फिर वह पलट गया और एक साधारण तम्बू के सामने मूसा से मिला? मेरा तर्क यह है कि जंगल के तम्बू या किसी अन्य निर्मित चीज़ के बारे में आंतरिक रूप से कुछ भी पवित्र नहीं था। परमेश्वर ने बस यह घोषित किया कि यह पवित्र है। तम्बू परमेश्वर के लिए नहीं था, यह लोगों के लिए था, ताकि वे स्पष्ट रूप से आश्वस्त हो सकें, उसकी उपस्थिति का स्मरण, ताकि उन्हें उसकी व्यवस्था और उसकी पवित्रता की याद दिलाई जा सके, ताकि वे पाप न करें; और यह एक महत्वपूर्ण शिक्षण उपकरण था। शायद आज हमारे लिए, उस समय के इस्राएलियों से भी अधिक।

परमेश्वर उठकर उस कमरे को पवित्र घोषित कर सकते हैं जिसमें हम सभी मौजूद हैं, और बस यही है। मुझे लगता है कि परमेश्वर ने उस सादे पुराने तम्बू को पवित्र घोषित कर दिया जिसमें वे वर्तमान में मूसा से मिल रहे थे। याद रखें, निर्गमन में अब कुछ समय के लिए इस्राएल द्वारा वाचा तोड़ने के परिणामस्वरूप सब कुछ उलट-पुलट हो गया है। इस्राएल ने परमेश्वर के साथ अपना रिश्ता तोड़ दिया है; और इसलिए परमेश्वर ने इस्राएल से अपनी उपस्थिति हटा दी है, और उनके साथ उनकी उपस्थिति ही इस्राएल को किसी और से अलग करती है। जबकि इस्राएल के "शिविर के अंदर" को स्वच्छ क्षेत्र माना जाता था, और "शिविर के बाहर" को अशुद्ध क्षेत्र, अभी "शिविर के अंदर" कोई स्वच्छ नहीं है। एकमात्र स्वच्छ क्षेत्र वह छोटा सा स्थान है, जहाँ इस्राएल ने डेरा डाला था, जहाँ मूसा ने वह अस्थायी तम्बू खड़ा किया और परमेश्वर से मिलने गया। शिविर के अंदर या बाहर होने का विचार वास्तव में केवल वर्तमान संदर्भ में ही अर्थ रखता है, इस अर्थ में कि प्रभु या तो इस्राएल के बीच में हैं, या नहीं और अभी के लिए प्रभु इस्राएल के बीच में नहीं हैं, इसलिए वे शिविर के अंदर नहीं हैं।

ठीक है। एक और छोटी पहेली: पद 11 में कहा गया है कि मूसा और परमेश्वर ने मिश्रों के रूप में आमने-सामने बात की। लेकिन बाद में, पद 20 में परमेश्वर कहते हैं कि मूसा सहित कोई भी परमेश्वर का चेहरा नहीं देख सकता। हम इस प्रतीत होने वाले विरोधाभास से कैसे निपटें? मैं इसके बारे में कुछ गहराई से बताने जा रहा हूँ, क्योंकि हमें तोरह में कई बार यह छोटा सा वाक्यांश "आमने-सामने" मिलेगा और उनमें से कई बार यह परमेश्वर द्वारा मूसा से बात करने का संदर्भ देता है।

यहाँ एक इब्रानी शब्द का इस्तेमाल किया गया है, जिसका मतलब उपस्थिति या चेहरा हो सकता है और यह है पैनीयम। इसका मतलब चेहरा हो सकता है, जैसा कि हम सोचते हैं। मानव या जानवर या यह "उपस्थिति" का संकेत दे सकता है। व्यक्तिगत रूप से, हालांकि हर बाइबिल अनुवादक या विद्वान मुझसे सहमत नहीं होगा, मुझे लगता है कि यहाँ जो हमें बताया जा रहा है वह यह है कि मूसा ने परमेश्वर से "सामने से उपस्थिति" में बात की थी। मूसा का चेहरा, परमेश्वर की उपस्थिति। इसका मतलब है कि परमेश्वर की आत्मा मौजूद थी, वह निकट थी बनाम दूर। यहोवा के साथ मूसा की बातचीत उस समय की प्रार्थना की तरह नहीं थी, जो मनुष्य को दूर से परमेश्वर से संवाद करने की अनुमति देती थी अर्थात्, पृथ्वी पर मनुष्य, स्वर्ग में परमेश्वर... अलग-अलग। वास्तव में परमेश्वर के साथ मूसा का "सामने से उपस्थिति" संचार एक आस्तिक के आधुनिक-दिन के प्रार्थना जीवन से लगभग अप्रभेद्य है, पिन्तेकुस्त के दिन से जब उसकी आत्मा हमारे अंदर निवास करने के लिए आई थी क्योंकि परमेश्वर की उपस्थिति हमेशा हमारे अंदर मौजूद रहती है। हम उससे दूर से बात नहीं करते... हम उससे

“एक दोस्त की तरह आमने- सामने” बात करते हैं क्योंकि वह निकट है। हमारे पास मूसा के अनुभव के समान ही विशेषाधिकार है।

एक और बात भी विचारणीय है: उस समय आमने-सामने का इस्तेमाल इब्रानी अभिव्यक्ति के रूप में किया जाता था और इसका मतलब दो चीजें हो सकती हैं: सबसे पहले, यह एक गहन बातचीत की बात कर सकता है। शायद गरमागरम बहस के समान या इससे भी बेहतर, कड़ी मोल-तोल। अगर आप कभी मध्य पूर्व गए हैं, या टीवी पर किसी ओरिएंटल मार्केट का यात्रा वृत्तांत देखा है, तो आप लोगों को जोर-जोर से बहस करते, हाथ हिलाते, भौंहेँ सिकोडते, एक-दूसरे पर गुस्सा करते हुए देखेंगे। यह पूरी तरह से सांस्कृतिक है और जिस तरह से वे व्यापार और बातचीत करते हैं; और किसी भी तरह से गुस्सा नहीं दिखाया जाता है। यहूदी धार्मिक सिद्धांतों और कानूनों पर चर्चा करते समय यहूदी भी यही करते हैं। दूसरा अर्थ यह है कि वास्तव में एक पक्ष गुस्सा दिखा रहा है। शास्त्रों में यह जानना बहुत मुश्किल है कि आमने-सामने का मतलब सिर्फ मौजूदगी है, या कड़ी मोल-तोल, या गुस्सा। यह सब संदर्भ में है, और यह सांस्कृतिक भी है।

हालाँकि, पद 20 में, इब्रानी विद्वानों के बीच आम धारणा यह है कि जब परमेश्वर मूसा से कहता है कि वह उसका चेहरा नहीं देख सकता है, तो यह एक सामान्य **उपस्थिति** की तुलना में एक चेहरे की तरह अधिक है जैसा कि हम एक मानवीय चेहरे के बारे में सोचते हैं। इसलिए, पद 11 परमेश्वर की उपस्थिति के बारे में है, जिस तरह से हम अपने दिनों में पवित्र आत्मा की अदृश्य उपस्थिति के बारे में सोचते हैं; और पद 20 परमेश्वर के चेहरे के बारे में है जो जाहिर तौर पर मानवीय आँखों को दिखाई दे सकता है।

फिर भी... इस बात का एक मजबूत संकेत है कि पद 11 में **आमने-सामने** की बातचीत में भी गरमागरम बहस का विचार शामिल है क्योंकि पद 12 से शुरू होकर, हमें परमेश्वर और मूसा के बीच यह विशिष्ट मध्य पूर्वी शैली की बातचीत मिलती है। मूसा सवाल करता है, परमेश्वर कहता है कि वह क्या करने जा रहा है। मूसा असहमत होता है और एक सुझाव देता है। परमेश्वर कहता है कि नहीं। मूसा परमेश्वर को अपने तरीके से देखने की कोशिश करता है। आखिरकार परमेश्वर सहमत हो जाता है।

अब, पद 19 में परमेश्वर कहता है कि वह मूसा को अपनी भलाई दिखाने जा रहा है, और वह मूसा के सामने प्रभु के नाम की घोषणा करने जा रहा है। बस इसलिए कि हम एक ही पृष्ठ पर हैं: वास्तव में यह कहा गया है कि “मैं यहोवा के नाम का प्रचार करूँगा” प्रभु नहीं। परमेश्वर कह रहा है कि वह अपना नाम बोलने जा रहा है, जो यहोवा है।

परमेश्वर मूसा को अपना स्वभाव प्रकट कर रहा है; मध्य पूर्वी संस्कृति में किसी का नाम प्रकट करना किसी के चरित्र को प्रकट करना है क्योंकि नाम और चरित्र जैविक रूप से जुड़े हुए हैं। परमेश्वर इतना पवित्र है कि मूसा भी उसका चेहरा नहीं देख सकता। परमेश्वर दयालु और कृपालु है, लेकिन, वह चुनेगा कि वह किसके प्रति दयालु और कृपालु है। मनुष्य ऐसे मामलों का फैसला नहीं करता।

अध्याय 33 का अंत, यहोवा द्वारा मूसा को चट्टान की एक दरार में खड़े होने के निर्देश के साथ होता है, और परमेश्वर स्वयं मूसा की आँखों को ढँक देता है ताकि वह परमेश्वर का चेहरा न देख सके। लेकिन, परमेश्वर के जाने के बाद, मूसा परमेश्वर की पीठ देख सकता है। इसका क्या मतलब है? मुझे नहीं पता मैंने जो भी पढ़ा है, चाहे यहूदी हो या ईसाई, वह काफी असंतोषजनक है, और रूपक के बराबर है। तो चलिए इसे यहीं छोड़ देते हैं।

आइये अध्याय 34 पर चलते हैं।

### अध्याय 34 पूरा पढ़ें

यदि अध्याय 32 परमेश्वर और मनुष्य के बीच वाचा सम्बन्ध के टूटने के बारे में था, और अध्याय 33 दिखाता है कि जब वाचा अमान्य हो जाती है तो क्या होता है, तो अध्याय 34 इसकी पुनः स्थापना के बारे में है; या जैसा कि एवरेट फॉक्स इसे कहते हैं, निर्गमन, **बेवफाई** और **पुनर्स्थापना** के 6 प्रभागों में से 5वाँ प्रभाग।

यहोवा ने मूसा को निर्देश दिया कि वह दो पत्थर की पटियाँ काटकर उन्हें माउंट सिनाई के शिखर पर ले आए। चूँकि हमने यह सब कहाँ हो रहा था, इस बारे में बात किए हुए कुछ समय बीत चुका है, इसलिए यह आपको याद दिलाने का एक अच्छा समय हो सकता है कि परमेश्वर के इस पर्वत को दूसरे नाम से भी जाना जाता है; सिनाई के साथ-साथ इसे माउंट होरेब भी कहा जाता है। वे एक ही हैं। मैं आपको यह भी याद दिलाना चाहूँगा कि यह अकल्पनीय है कि माउंट सिनाई का स्थान सिनाई प्रायद्वीप में था। माउंट सिनाई का पारंपरिक स्थान, जहाँ सेंट कैथरीन मठ बना हुआ है और जहाँ हजारों ईसाई तीर्थयात्री हर साल मूसा और 10 आज्ञाओं की कल्पना करने आते हैं, दोनों ही शास्त्रों के वर्णन और भौगोलिक संभावनाओं को चुनौती देता है। आइए याद करें कि यह स्थल, सिनाई के दक्षिणी छोर के पास, परमेश्वर का पर्वत घोषित किया गया था: चौथी शताब्दी में रोम के सम्राट कॉन्स्टेंटाइन ईसाई बन गए थे और उन्होंने ईसाई धर्म को रोमन साम्राज्य के भीतर एक सरकारी अधिकृत और इसलिए कानूनी धर्म घोषित किया था। उनकी माँ हेलेना भी एक धर्मातरित थी और माँ और बेटे दोनों को ही दर्शन होने की संभावना थी। इस्राएल में लगभग हर बाइबिल स्थल जिस पर मठ या कैथोलिक चर्च बना है, उसे हेलेना ने मसीह से संबंधित किसी घटना का स्मरण करने के लिए आदेश दिया था और, लगभग सार्वभौमिक रूप से, इन विशिष्ट स्थलों में कोई ज्ञात ऐतिहासिक वास्तविकता नहीं थी; ये स्थल प्रारंभिक चर्च के पिता या यहूदी रब्बियों से सहमत नहीं थे। बल्कि ये विकल्प जो अब ईसाई परंपरा में इतने दृढ़ हो गए हैं, उनके सपनों और दर्शनों के परिणाम थे। माउंट सिनाई एक ऐसा ही स्थल है। कोई सोच सकता है कि अगर असली माउंट सिनाई का स्थल हेलेना द्वारा चुना गया था, तो यहूदी सदियों तक इसका बहुत सम्मान करते, इससे पहले कि वह अस्तित्व में आए। यहूदियों को इस स्थान के बारे में माउंट सिनाई के रूप में कुछ भी पता नहीं था।

दिलचस्प बात यह है कि गलातियों 4:25 में सेंट पॉल ने कहा है कि माउंट सिनाई अरब में है। युसूफ ने भी कहा है कि माउंट सिनाई अरब में है, जैसा कि फिलो ने कहा है। आइए हम यह भी याद रखें कि मूसा के लोगों को मुक्त करने के लिए मिस्र जाने से पहले, जब वह मिद्यान में चरवाहा था, तो वह मिद्यान में एक पहाड़ पर जल रही एक झाड़ी की ओर आकर्षित हुआ था। बाइबिल स्पष्ट रूप से बताता है कि वही पहाड़ जिस पर

मूसा ने पहली बार परमेश्वर से मुलाकात की थी, जलती हुई झाड़ी में, वही वह था जहाँ इस्राएल को मिस्र छोड़ने के बाद लाया गया था: मिद्यान अरब प्रायद्वीप में है। अब कुछ परंपरावादी ईसाई विद्वानों ने यह कहते हुए इसका विरोध किया है कि उस समय सिनाई को अरब का हिस्सा माना जाता था। यह बिल्कुल गलत है और इस बात का कोई सबूत नहीं है। ऐसा कोई सबूत कभी नहीं मिला है या ऐसा कोई दस्तावेज नहीं है जो इस बात का संकेत दे। यह पूरी तरह से कल्पना है। लेकिन यह अच्छी तरह से प्रलेखित है कि मिस्र ने मूसा के समय सिनाई को नियंत्रित किया था और मिद्यान अरब प्रायद्वीप पर था। कुछ विद्वान संत पौलुस और यूसुफ को यह कहकर समझाने की कोशिश करते हैं कि अरब का यह उल्लेख रूपक या रूपक रहा होगा। बेशक, रूपक और रूपक इस बात के मूल में हैं कि चर्च पिछली 2 शताब्दियों में इतना भटक क्यों गया है, और यह कैसे हो सकता है कि सचमुच हजारों ईसाई संप्रदायों का गठन किया गया है जो सभी कथित रूप से एक ही सामान्य दस्तावेज बाइबिल पर अक्सर इतने अलग-अलग विश्वास और विचार रखते हैं। यानी, चूँकि बाइबिल को उसके शब्दों पर लेना (इसे शाब्दिक रूप से लेना) आमतौर पर पश्चिमी गैर-यहूदी चर्च सिद्धांतों को उड़ा देता है जो ईसाई धर्म से यहूदियों को हटाने की कोशिश करते हैं, इसलिए शास्त्रों को रूपक और रूपक बनाना उनका समाधान बन गया। ऊपर नीचे के लिए रूपक बन गया, इस्राएल चर्च के लिए रूपक बन गया, पूर्व बुराई के लिए रूपक बन गया, और पश्चिमी अरब सिनाई के लिए रूपक बन गया बकवास। हमने कुछ समय पहले निर्गमन के मार्ग और उस क्षेत्र को देखा, जहाँ पौलुस और यूसुफ कहते हैं कि माउंट सिनाई स्थित है, और एक ऐसी जगह मिली जो न केवल बाइबिल के वर्णन से मेल खाती थी, बल्कि इस बात के पुरातात्विक प्रमाण भी मिले थे कि इस्राएली वहाँ रहते थे और, वह जगह अरब में थी। वैसे: इस पर बहुत परेशान होने की कोई बात नहीं है। माउंट सिनाई वास्तव में अरब में था, इससे परमेश्वर के नियमों और तरीकों, मसीह के बारे में या हमारे विश्वास के बारे में कुछ नहीं बदलता: यह जानना दिलचस्प है कि कुछ परंपराएँ कैसे शुरू हुईं और हम इस बात पर आश्चर्य कर सकते हैं कि लाखों लोग सच्चाई के बजाय मिथकों को क्यों स्वीकार करना पसंद करेंगे।

पत्थर की पट्टियों पर वापस आते हैं; परमेश्वर कहता है कि वह इन नई पट्टियों पर 10 आज्ञाएँ लिखने जा रहा है (या बेहतर होगा कि फिर से लिखे), ताकि उन पट्टियों को बदला जा सके जिन्हें मूसा ने यहोवा के विरुद्ध लोगों के भयंकर विद्रोह को देखकर तोड़ दिया था जब उन्होंने सोने का बछड़ा बनाया था। याद करें कि मूसा द्वारा उन पट्टियों को तोड़ना मध्य पूर्वी रीति-रिवाज था जो यह संकेत देता था कि दो पक्षों के बीच एक समझौते, एक वाचा का उल्लंघन किया गया था और इसलिए वह पट्टिका जो कि नियमों की शर्तों को पूरा करती है, जिस वाचा पर हस्ताक्षर किए गए थे, उसे औपचारिक रूप से सचमुच तोड़ दिया गया।

यहोवा बादल में उतरा जहाँ मूसा आया था। जैसा कि यह हमें एक बार फिर दिखाता है, चाहे वह पहाड़ पर हो, या जल्द ही तम्बू में, परमेश्वर की उपस्थिति हर समय वहाँ नहीं थी; वह आया और चला गया।

अब, पिछले अध्याय के अंत में, अध्याय 33 में, मूसा ने परमेश्वर की महिमा को देखने के लिए कहा था और परमेश्वर मूसा के अनुरोध को स्वीकार करने के लिए तैयार था कुछ हद तक। इस सवाल का जवाब कि मूसा कहाँ खड़ा होगा और परमेश्वर की महिमा को गुजरते हुए देखेगा, अब मिल गया है: माउंट सिनाई का

शिखर। जिस चट्टान की दरार में मूसा छिप जाएगा, जबकि परमेश्वर का दृश्यमान सार गुजरेगा, वह पवित्र पर्वत की चोटी पर थी। आइए एक मिनट के लिए उस पर नजर डालें।

पद 6 और 7 में जो हो रहा है वह यह है कि यहोवा मूसा को अपने चरित्र की घोषणा कर रहा है। आज, हम इसे हल्के में लेते हैं। अगर हम कभी चर्च या आराधनालय गए हैं तो हमें यहोवा के प्रेम, दया, इत्यादि के बारे में पढ़ाया गया है। लेकिन ये कुछ पदें इतनी महत्वपूर्ण और इब्रानी धर्म के लिए इतनी केंद्रीय हैं कि वे भविष्य के यहूदी अनुष्ठान का हिस्सा बन गए, और उन्हें "परमेश्वर के 13 गुण" के रूप में जाना जाता है। यहोवा मूसा से कहता है कि उसका सार दया, प्रेम, धैर्य और विश्वासयोग्यता है; कि वह उन लोगों के प्रति वफादार है जिन्हें उसने अलग रखा है। 6 में 1000वीं पीढ़ी तक वफादारी बनाए रखना एक इब्रानी मुहावरा है जिसका सीधा सा मतलब है **हमेशा के लिए**। फिर भी, यहोवा कहता है कि उसका न्याय यह माँग करता है कि वह दोषी को निर्दोष न कह सके। वास्तव में, पिताओं के पाप उनकी संतानों को तीसरी और चौथी पीढ़ी तक प्रभावित करेंगे। इससे भी अधिक परमेश्वर इसे तीसरी और चौथी पीढ़ी तक प्रभावित करेगा। अब, तीसरी और चौथी पीढ़ी क्यों? क्योंकि, उस समय जब बड़े परिवार जन्म से लेकर मृत्यु तक एक साथ रहते थे, एक सामान्य परिवार इकाई में 3 और 4 पीढ़ियाँ होती थीं, इसलिए यह पूरे परिवार को संदर्भित करता है। दूसरे शब्दों में, यह सामान्य था कि परदादा—परदादी, दादा—दादी, माता—पिता और बच्चे सभी एक ही परिवार इकाई में रहते थे। एक साथ रहते और काम करते थे। इसलिए, जब परदादा के पापों की सजा दी जाती थी, तो स्वाभाविक रूप से इसका असर घर के बाकी सदस्यों पर भी पड़ता था। हमारी संस्कृति में, जिसे जनसांख्यिकीविद एकल परिवार कहते हैं, यानी, केवल माता—पिता और उनके तत्काल बच्चे ही एक घर बनाते हैं, एक 2 पीढ़ी का परिवार इकाई, यह उसी तरह काम करता है, और दुख की बात है कि हममें से अधिकांश लोग यह जानने के लिए पर्याप्त बूढ़े हैं, कि जब हम पाप करते हैं, और इसके लिए अनुशासित होते हैं, या परमेश्वर हमारे पाप के प्राकृतिक परिणामों को निभाने की अनुमति देते हैं, तो यह अक्सर पूरे परिवार को नुकसान पहुँचाता है।

3 और 4 पीढ़ियों के एक साथ रहने की यह पूरी तरह से समझी गई वास्तविकता है जिसने "3 और 4 पीढ़ी तक" वाक्यांश को एक इब्रानी अभिव्यक्ति बनने की अनुमति दी जिसका मूल रूप से अर्थ था "छोटा" इसलिए ये पदें इस बात के विपरीत हैं कि प्रभु उन लोगों पर हमेशा दया दिखाएगा जो उससे प्रेम करते हैं और उसकी आज्ञा मानते हैं, लेकिन एक व्यक्ति के पाप के परिणाम अपेक्षाकृत कम समय तक रहेंगे।

मैंने कई अवसरों पर बाइबिल के एक सिद्धांत का उल्लेख किया है जो हमेशा से महत्वपूर्ण रहा है, लेकिन वास्तव में चर्च या हमारे राष्ट्र के लिए पिछले 5 या 6 वर्षों तक यह प्रमुख और केंद्र में नहीं रहा था, और सिद्धांत यह है: केवल दो तरीके हैं जिनसे हम जान सकते हैं कि हमारा अदृश्य परमेश्वर कौन है: उसका नाम और उसकी विशेषताएँ। हमें परमेश्वर की कई विशेषताएँ, गुण दिए गए हैं और उनका नाम उन गुणों के साथ सावधानीपूर्वक और दृढ़ता से जोड़ा गया है। वास्तव में यह स्वयं परमेश्वर ही थे जिन्होंने अपना नाम युद—हे—वाव—हेह, यहोवा उच्चारित किया और मूसा को अपनी विशेषताएँ बताईं। जाहिर है कि यह परमेश्वर के बारे में **संपूर्ण** सूची के रूप में नहीं था। लेकिन वास्तव में, हमें और कितना चाहिए?

आज, चर्च के भीतर इस बात पर बहस चल रही है कि मुसलमानों का यह दावा कि उनका परमेश्वर अल्लाह, ईसाइयों और यहूदियों के परमेश्वर यहोवा जैसा ही परमेश्वर है या नहीं। मैंने कुछ समय पहले इस विषय पर एक व्याख्यान दिया था। निष्कर्ष यह है कि, कुरान का अध्ययन करने और कुछ गहन शोध करने के बाद, मैं आश्वस्त हूँ कि अल्लाह संभवतः यहोवा नहीं हो सकता। क्यों? सबसे पहले, उनके नाम एक जैसे नहीं हैं। बाइबिल नामों को बहुत महत्व देता है। विशेष रूप से परमेश्वर और मसीह के नाम को। चर्च ने नामों को हमारे सिद्धांत में एक महत्वहीन स्थान माना है और यह हमें परेशान कर रहा है। नहीं, अल्लाह, यहोवा का अरबी अनुवाद नहीं है। अल्लाह अरब के चंद्र देवता का लगभग 4000 साल पुराना नाम है। यह अपने आप में यहोवा और अल्लाह के बीच किसी भी रिश्ते को अयोग्य ठहराता है।

दूसरा, अल्लाह और यहोवा के गुण एक जैसे नहीं हैं। निर्गमन 34 में यहोवा ने अपने बारे में जो 13 गुण बताए हैं, उनमें से हर एक को लें, और आप पाएँगे कि कुरान में अल्लाह को दिए गए गुणों के लगभग, अगर ठीक से नहीं, तो बिल्कुल विपरीत गुण हैं, जो कि बाइबिल के मुस्लिम समकक्ष हैं। अगर उनके नाम या गुण एक जैसे नहीं हैं, तो यह सोचना हास्यास्पद है कि वे एक ईश्वर है। हमें बाइबिल के नामों, त्योहारों, नियत समय और सब्त पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है; और जब हम ऐसा करेंगे तो हम और अधिक अच्छी तरह से समझ पाएँगे कि परमेश्वर कौन है, वह किस बारे में है, और सत्य को मनुष्यों के दर्शन और झूठे धर्मों के साथ मिलाने के परिणामों से बचेंगे, खासकर हमारे समय में जब किसी भी कीमत पर सहिष्णुता और शांति का आह्वान किया जाता है।

आइए फिर से उन दो आयों पर वापस जाएँ, पद 6 और 7. जब हम मूल इब्रानी में कुछ मुख्य शब्दों को देखते हैं तो हम कुछ गहरी समझ हासिल कर सकते हैं। मैं कुछ इब्रानी शब्दों को प्रतिस्थापित करना चाहता हूँ जिनसे आप में से अधिकांश अब परिचित हैं, पद 6 में उनके अंग्रेजी अनुवादों के लिए; यह आयत शाब्दिक रूप से इस प्रकार है: **“यहोवा उसके सामने से गुजरा और घोषणा की: ‘यहोवा, यहोवा, एल दयालु और अनुग्रहकारी, कोप करने में धीमा, दयालु है’** और इसी तरह। मैं आपको यह दिखाने की कोशिश कर रहा हूँ कि कई पारंपरिक कारणों से अंग्रेजी अनुवाद वास्तव में परमेश्वर का नाम नहीं कहते हैं। इसके बजाय जब परमेश्वर का नाम (YHWH येहोवे) वास्तव में मूल में लिखा जाता है, तो अनुवादक परमेश्वर, या परमेश्वर लिखते हैं। परमेश्वर और प्रभु नाम नहीं हैं। हमारे समाज में हम उपाधियों और नामों को भी अलग-अलग चीजों के रूप में देखते हैं: मिस्टर या मिसेस कोई नाम नहीं है, है न? डॉक्टर या कांग्रेसमैन भी नहीं। बेकी एक नाम है; जेरी एक नाम है; राजा और राष्ट्रपति नाम नहीं हैं, वे सिर्फ अवैयक्तिक उपाधियाँ हैं।

इसलिए जब परमेश्वर अपना नाम उच्चारण करता है, तो यह एक बहुत ही व्यक्तिगत बात है। इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि पद 5 में जब यह कहा गया है कि परमेश्वर ने अपना नाम उच्चारण किया, तो हमें यह वाक्यांश मिलता है जो मैंने अभी आपको दिया है, जिसके द्वारा वह वास्तव में अपना औपचारिक नाम उपयोग करता है: **“येहोवे, यहोवा, एल दयालु है।”** इब्रानी शब्द “एल” के इस्तेमाल पर भी ध्यान दें। एल देवताओं के किसी भी समूह में सर्वोच्च देवता के लिए एक उपाधि है। एल शब्द केवल यहोवा के लिए इस्तेमाल नहीं किया जाता

है। एल एक ऐसी उपाधि थी जिसे विभिन्न मूर्तिपूजक धर्म अपने उन देवताओं में से किसी एक को देते थे जिन्हें वे अन्य सभी से ऊपर मानते थे। इसलिए अवधारणा है "अन्य देवताओं से ऊपर परमेश्वर"। इसलिए बाइबिल में हम नियमित रूप से "देवताओं का देवता", "प्रभुओं का प्रभु", या "राजाओं का राजा" जैसे भाव देखेंगे। ये सभी "एल" शब्द की अवधारणा की अभिव्यक्तियाँ हैं।

मैं आपको यह भी याद दिला दूँ कि अधिकांश बाइबिल संस्करण (अनुवाद) कभी-कभी यहोवा, परमेश्वर के नाम के रूप में इसका उपयोग करते हैं। (मेरी पुस्तक में उनके नाम का उच्चारण करने का एक उचित स्वीकार्य प्रयास), वही संस्करण उस नाम को पूरे पुराने नियम में कुल मिलाकर 4 या 5 से लेकर शायद 15 या 20 बार इस्तेमाल करेंगे। लेकिन मूल इब्रानी में परमेश्वर का नाम, YHWH 6000 से ज़्यादा बार लिखा गया है!

अब, क्या परमेश्वर ने यह सब अचानक से किया? नहीं, यह मूसा के पिछले अध्याय (33) के अनुरोध के जवाब में था जहाँ उसने पद 13 में कहा, "अब कृपया मुझे अपने मार्ग दिखाओ", और फिर पद 18 में, "मैं विनती करता हूँ कि आप मुझे अपनी महिमा दिखाएँ"।

आगे बढ़ते हुए: जब परमेश्वर ने मूसा को अपना नाम और गुण बताए, और उसके सामने से गुज़रा, तो मूसा ने इस मौके का इस्तेमाल परमेश्वर से इस्राएल के साथ टूटे हुए रिश्ते को फिर से जोड़ने की अपील करने के लिए किया। वह यहोवा के सामने अपने चेहरे के बल गिर पड़ा, यहोवा के हालात के आकलन से सहमत हुआ, और फिर से जोड़ने की गुहार लगाई। **यहीं, यहीं, हमारे लिए एक आदर्श है कि जब हम जानते हैं कि हमने परमेश्वर के खिलाफ अपराध किया है**, तो हमें परमेश्वर के पास जाना चाहिए। सबसे पहले, हमें एहसास होता है कि हमने क्या पाप किया है, दूसरा, हम उस पाप को परमेश्वर के सामने स्वीकार करते हैं और इस बात पर उससे सहमत होते हैं कि यह पाप है, और तीसरा, हम फिर से जोड़ने के लिए क्षमा के लिए प्रार्थना करते हैं। अब यह तथ्य कि हमारे सभी पाप पहले ही क्षमा किए जा चुके हैं और मसीह के पूर्ण कार्य के कारण उनका भुगतान किया जा चुका है, इससे यह नहीं बदलता कि हमें क्या करना है।

हमें अभी भी हर दिन यहोवा के सामने जाना है, उसके सामने अपने पापों को स्वीकार करना है (क्योंकि हम अभी भी पाप करते हैं, है न?), और क्षमा माँगनी है। लेकिन मूसा के विपरीत, जिसे उत्तर के लिए प्रतीक्षा करनी पड़ी हॉ मैं क्षमा करूँगा, नहीं मैं नहीं करूँगा हमें आश्वासन दिया जाता है कि जब **हम** पश्चातापी हृदय से स्वीकार करते हैं तो **हमें** क्षमा कर दिया जाता है। अब समझिए कि यह कितना क्रांतिकारी है। मूसा के दिनों में, मसीह के दिनों से लेकर उसके बाद तक, लोग अक्सर इस बात को लेकर चिंतित और बेचैन रहते थे कि क्या परमेश्वर उनके द्वारा किए गए पाप को क्षमा करेगा या नहीं। जब कोई पाप करता था तो प्रायश्चित के लिए बलिदान की आवश्यकता होती थी। यदि उनका बलिदान ठीक से नहीं किया गया था, या एक निश्चित समय के भीतर पूरा नहीं किया गया था या यदि उनकी सहायता करने वाला पुजारी अनुष्ठानिक रूप से शुद्ध नहीं था, या अन्य संभावित प्रक्रियात्मक त्रुटियों की लंबी सूची में से कोई एक था। तो बलिदान यहोवा द्वारा स्वीकार नहीं किया जा सकता था, और इसलिए क्षमा नहीं दी गई। लोगों को कई बार बिल्कुल भी यकीन नहीं था कि उन्हें क्षमा

किया गया है या नहीं; और इसलिए उन्होंने एक भयानक बोज़ उठाया। विश्वासियों को यह समस्या नहीं है यीशु को धन्यवाद।

अब हमें बहुत ही गंभीरता से यह ध्यान रखना चाहिए कि जब परमेश्वर ने निर्गमन 34 में इस्राएल को क्षमा किया और उनके साथ संबंध बहाल किए, तब भी वह उनके बीच रहने के लिए सहमत नहीं हुआ, न ही उसने फिर से इस्राएल को "मेरे लोग" कहना शुरू किया। इस्राएल को इतनी आसानी से दिए गए विशेषाधिकार और परमेश्वर और इब्रानियों के बीच की घनिष्ठता कुछ समय के लिए गायब होने वाली है। यह परमेश्वर का अनुशासन है और यह उनके पाप के लिए एक आवश्यक परिणाम है, भले ही उन्हें क्षमा कर दिया गया हो या किया जाएगा।

कुछ संप्रदायों के बीच यह आधुनिक इंजील सिद्धांत कि ईसाई बिना किसी परिणाम (अनुशासन या दंड के) के पाप कर सकते हैं, गलत सोच वाला है और बिना किसी शास्त्रीय समर्थन के, पुराने नियम या नए नियम के। क्षमा, क्षमा है, परिणाम, परिणाम है। एक दूसरे को समाप्त नहीं करता है।

पद 10 में, परमेश्वर इस्राएल के साथ को पुनः स्थापित करता है जिसे उन्होंने स्वर्ण बछड़े के धर्मत्याग के माध्यम से तोड़ा था। लेकिन यहोवा यह स्पष्ट करता है कि इस्राएल के लिए दो शर्तें हैं जिनका पालन करना होगा, यदि उस वाचा के भीतर इस्राएल के लिए परमेश्वर के वादे पूरे होने हैं; पहला, जैसा कि पद 11-16 में बताया गया है, इस्राएल को कनानियों के साथ घुलना-मिलना नहीं चाहिए और खुद को उनकी मूर्तिपूजा में शामिल नहीं करना चाहिए। दूसरा, कई परमेश्वर-निर्धारित अनुष्ठान, नियुक्त समय हैं, (जैसा कि पद 17-26 में उल्लिखित है) जिन्हें उन्हें हमेशा रखना है।

और, उसी प्रारूप में जैसे कि वाचा पहले दी गई थी, परमेश्वर कहता है, यदि तुम ऐसा करोगे, तो मैं कनानियों, हितियों, परिजियों, हितियों और यबूसियों को उस देश से निकाल दूंगा जो मैं तुम्हें देने जा रहा हूँ। हालांकि, यहोवा कहता है, तुम इन लोगों में से किसी के साथ कोई और वाचा, शांति संधि करने की हिम्मत मत करना या किसी अन्य जनजाति के साथ जो कनान की भूमि में बसी है, वह भूमि जिसे परमेश्वर इस्राएल को दे रहा है। इस्राएल को केवल यहोवा के साथ वाचा करनी है। बल्कि इस्राएल को कनान की बलि वेदियों को नष्ट करना है; उनके खड़े पत्थरों को तोड़ना है। खड़े पत्थर एक देवता के स्मारक थे और उनके पेड़ के खंभे (टोटेम पोल के समान कुछ, जो मूर्तियाँ थी) को काट देना है। दिलचस्प बात यह है कि यहाँ इस्तेमाल किया गया शब्द जिसका अक्सर पेड़ खंभे या पवित्र खंभे के रूप में अनुवाद किया जाता है, और कुछ संस्करणों में "ग्रोव्स" (सबसे शाब्दिक अनुवाद), इब्रानी में "अशेराह" या अधिक शाब्दिक रूप से "अशेरिम" है, जो बहुवचन रूप है। अशेराह वह जगह है जहाँ से अशतोरथ नाम आया है; इस देवी अशतोरथ को अस्तार्ट भी कहा जाता है, और कुछ अन्य संस्कृतियों में इसे इस्तार कहा जाता है। अशेराह, अशतोरथ, अस्तार्ट और इस्तार सभी एक ही चीज को संदर्भित करते हैं: प्रजनन देवी पंथ पूजा।

जब भी इस्राएल मूर्तिपूजा में लिप्त हुआ तो उन्होंने या तो चंद्रदेव या प्रजनन देवी को अपनी पूजा में शामिल करना शुरू कर दिया, क्योंकि ये देवी-देवता सार्वभौमिक रूप से बहुत सम्मानित थे।

इब्रानियों ने आम तौर पर यहोवा की पूजा करना बंद नहीं किया, उन्होंने बस मिश्रण में एक या दो अन्य देवता जोड़ दिए। क्या यह दिलचस्प नहीं है कि जितना चर्च प्राचीन इस्राएल को उनकी मूर्ति पूजा के लिए शर्मिंदा करने से खुद को नहीं रोक सकता है, उतना ही हम ईसाइयों ने इस मूर्तिपूजक प्रजनन देवी (जिसे परमेश्वर घृणित कहते हैं) के लिए बाइबिल में इस्तेमाल किए गए समान नाम को अपनाया है, जिसे शायद हमारे सबसे पवित्र पवित्र दिन के नाम के रूप में इस्तेमाल किया जाता है: ईस्टर। यह सही है; ईस्टर एंग्लो-सैक्सन में इश्तार के लिए है: ईस्टर एंग्लो-सैक्सन प्रजनन देवी थी (यही कारण है कि हमारे आधुनिक ईस्टर उत्सव में खरगोश और ईस्टर अंडे का उपयोग किया जाता है क्योंकि खरगोश अक्सर प्रजनन देवी का प्रतीक होता था और अंडे, अंडाणु, प्रजनन के प्रतीक थे)। हमें इस बारे में लंबे समय तक और गहराई से सोचना चाहिए और हमारी कितनी अन्य परंपराएँ ऐसी हैं जिन्हें हम इतना प्रिय और निंदा से परे मानते हैं।

अब पद 14 में स्वर्ण बछड़े की घटना लोगों के दिमाग में बहुत ताज़ा है, परमेश्वर ने अपनी आज्ञा दोहराई कि इब्रानियों को किसी अन्य देवता के सामने झुकना नहीं है। पद 15 में यहोवा ने इस्राएल से कहा कि यदि तुम कनान देश में रहने वाले इन विभिन्न जनजातियों में से किसी के साथ वाचा बाँधते हो। यानी संधि करते हो... तो यह तुम्हें बहुत ही फिसलन भरी ढलान पर ले जाएगा। बेशक, तोरह के तुरंत बाद की किताबों में, हम देखेंगे कि यहोशू और अन्य लोग ठीक वही कर रहे हैं जो परमेश्वर ने यहाँ निषिद्ध किया है; वे इनमें से कई कनान जनजातियों के साथ शांति संधि करते हैं। आप देखते हैं कि इस्राएल ने जो किया वह परमेश्वर के निर्देशों की अवहेलना करना था और अपने स्वभाविक दिमाग के अनुसार जो बेहतर तरीका था उसे अपनाया था। कुछ उदाहरणों में उन्होंने संधियों की जो कनान राजाओं को सत्ता में बने रहने की अनुमति देती थीं यदि वे बदले में इस्राएल को श्रद्धांजलि, कर देते थे। कौन मुफ्त पैसा और थोड़ी अतिरिक्त आय नहीं चाहता? इसके अलावा, पूरी दुनिया अनादि काल से इसी तरह काम करती आ रही है। एक विजेता अक्सर राजा को सत्ता में बनाए रखने का विकल्प चुनता था, अगर यह लाभदायक होता। अन्य मामलों में इस्राएल ने सोचा कि वे लोगों को उस भूमि से न हटाकर प्रेम और दया दिखा रहे थे, जिसके बारे में परमेश्वर ने कहा था कि उन्हें हटाया जाना चाहिए। निश्चित रूप से परमेश्वर उनके अच्छे और प्रेमपूर्ण होने की उनकी **ईमानदार** इच्छा को समझेगा और उनका सम्मान करेगा, है न? उस मानसिकता के परिणाम विनाशकारी साबित हुए और आज भी इसके परिणाम जारी हैं। मूसा और यहोशू के दिनों से परमेश्वर के स्पष्ट आदेशों की अवज्ञा मध्य पूर्व में व्याप्त अव्यवस्था के लिए काफी हद तक जिम्मेदार है, मैं बहुत अधिक उपदेश नहीं देना चाहता, लेकिन यदि कभी परमेश्वर की कलीसिया को बुलावा आया, तो वह समझौता न करने वाला, निर्गमन का यह भाग यही है। यहोवा धार्मिक सहिष्णुता का देवता नहीं है। यहोवा समझौता और आम सहमति का देवता नहीं है। यहोवा हमारी ईमानदारी या प्रेम की हमारी सांसारिक परिभाषा को अपने आदेशों से ऊपर नहीं रखता। हमें पद 14 में बताया गया है (और यह पहली बार नहीं है जब हमने इस कथन का सामना किया है) कि वह एक ईर्ष्यालु देवता है और झूठे परमेश्वर की पूजा को बर्दाश्त नहीं करेगा। उसने अपने लोगों से बस इतना कहा कि वे खुद को मूर्तिपूजकों के साथ न मिलाएँ क्योंकि यह अपरिहार्य है कि वे उन लोगों के साथ अच्छे संबंध चाहते हैं और इसके लिए अनिवार्य रूप से समझौता करना होगा और प्रभु बहुत कठोर भाषा का उपयोग करते हैं जिसे आमतौर पर उन सज्जन लोगों द्वारा कमजोर कर दिया जाता है जिन्होंने हमारे

लिए बाइबिल का अनुवाद किया है, और इसके पाठकों को नाराज नहीं करना चाहते हैं। उदाहरण के लिए, परमेश्वर अपने बीच मूर्तिपूजक देवताओं को स्वीकार करने के कार्य को "वेश्यावृत्ति" कहते हैं। हम सभी जानते हैं कि इसका क्या मतलब है।

आधुनिक दुनिया अब कहती है कि मानवता के सामने आने वाले खतरनाक समय में, ग्रह पर हर व्यक्ति दो श्रेणियों में से एक में आता है: सहनशील या घृणा से भरा हुआ; यदि आप एक नहीं हैं, तो आप दूसरे हैं। मेरी बात ध्यान से सुनिए: यह एक शैतानी सिद्धांत है, परमेश्वरीय सिद्धांत नहीं। परमेश्वर के लोगों को झूठे देवताओं, जैसे अल्लाह, के प्रति बिल्कुल भी सहनशील नहीं होना चाहिए; या क्या यह परमेश्वर द्वारा बुराई को अच्छा घोषित करना है, जैसे समलैंगिकता या गर्भपात, या क्या हमें मूर्तिपूजकों की इच्छाओं और रीति-रिवाजों के आगे झुकना है, जैसे कि हैलोवीन जैसे उनके पवित्र दिनों में उनके साथ शामिल होना, सब कुछ साथ रहने के लिए दूसरी ओर हमारी प्रतिक्रिया घृणा या हिंसा नहीं होनी चाहिए; न ही संघर्ष और उथल-पुथल पैदा करने के लिए अपने रास्ते से हट जाना चाहिए। हमें प्रकाश बनना है, तलवार नहीं। कोमल, मतलबी नहीं। लेकिन हमारे पास एकमात्र प्रकाश हमारे उद्धारकर्ता का प्रकाश है; और यदि हम उनके विरोधी के तरीकों को सहन करते हैं, स्वीकार करते हैं, सम्मान करते हैं, या उनके साथ जुड़ते हैं, तो क्या हम वास्तव में उम्मीद कर सकते हैं कि इससे परमेश्वर की महिमा होगी? जब इस्राएल ने जंगल में यही किया, तो परमेश्वर ने उनसे अपनी उपस्थिति हटा ली, और उनके बीच रहना बंद कर दिया और यहाँ तक कि उनका नेतृत्व करना भी बंद कर दिया। क्या हम ईमानदारी से मानते हैं कि परमेश्वर का चरित्र बदल गया है और अब वह अपने आधुनिक निवासस्थानों को सहन करेगा जहाँ उसकी पवित्र आत्मा निवास करती है (हम!) जो दुनिया के तरीकों का पीछा करते हैं (या जैसा कि इन पदों में कहा गया है, वेश्यावृत्ति करते हैं)?

हमें दृढ़ रहना सीखना होगा और यह समझना होगा कि परमेश्वर के साथ शांति और संसार के साथ शांति एक ही बात नहीं है। वास्तव में, हमारे युग में, वे विपरीत हैं, और जैसे इस्राएल को वादा किए गए देश में बसने के लिए करना पड़ा था, उन्हें एक या दूसरे को चुनना था, दोनों के बीच समझौता नहीं। हम अगले सप्ताह अध्याय 34 के साथ जारी रखेंगे।